Indian Journal of Sci. Research: 2026 SPECIAL EDITION ISSN: 0976-2876 (Print)
Proceeding of R.B.G.P. 21st Century Edu.,Eco.,Sci. & Tech. DOI: 10.32606 ISSN: 2250-0138 (Online)

सफलता के विविध आयामः भारतीय ज्ञान–परम्परा के संदर्भ में

राजू प्रसाद अहरवाल[1]

शासकीय कमला नेहरु महिला महाविद्यालय दमोह, म.प्र., भारत

सारांश

वर्तमान समय में सफलता केवल आर्थिक संपन्नता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और सामाजिक योगदान का एक संतुलित योग है। इस शोध में भारतीय ज्ञान परंपरा (वेदों, उपनिषदों रामायण, महाभारत, भारतीय दर्शनों,कथा साहित्य तथा संस्कृत सुभाषितों) के आलोक में यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि सफलता एक 'समग्र प्रक्रिया' है, जो मन की एकाग्रता से शुरू होकर सतत् प्रयास पर समाप्त होती है। वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा, तकनीकी प्रगति तथा विविध अवसरों का युग है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है, किन्तु सफलता केवल आकांक्षा से नहीं, बल्कि सुविचारित योजना, मानसिक दृढ़ता, शारीरिक सुदृढ़ता, स्पष्ट लक्ष्य निर्धारण, उचित पाठ्यक्रम, निरंतर अभ्यास तथा धैर्यपूर्ण प्रयास से प्राप्त होती है। प्रस्तुत शोधपत्र में सफलता के प्रमुख आयामकृमन, तन, लक्ष्य, पाठ्यक्रम, तैयारी, आत्मविश्वास तथा पुनः प्रयासकृका विश्लेषण भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में किया गया है।

मुख्य शब्दः सफलता, लक्ष्य निर्धारण, भारतीय ज्ञान परंपरा, आत्मविश्वास, शिक्षा, तैयारी, व्यक्तित्व विकास ।

प्रस्तावना

मानव जीवन में सफलता का महत्व अत्यंत व्यापक है। सफलता केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का आधार भी है। आधुनिक युग में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण सफलता के लिए सुनियोजित प्रयास, अनुशासन तथा सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भी मन, शरीर, लक्ष्य और प्रयास को सफलता के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया गया है।

21वीं सदी अवसरों और चुनौतियों का एक जटिल मिश्रण है। जहाँ एक ओर वैश्वीकरण ने केरियर के नए द्वार खोले हैं, वहीं दूसरी ओर मानसिक तनाव और अनिश्चितता भी बढ़ी है। सफलता प्राप्त करना हर मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है, किन्तु इसकी प्राप्ति के लिए केवल इच्छाशक्ति पर्याप्त नहीं है। सफलता के लिए एक त्रिकोणीय तालमेल आवश्यक हैरू

योजना क्रियान्वयन और धैर्य भारतीय दर्शन में श्पुरुषार्थश की अवधारणा हमें सिखाती है कि बिना कर्म के प्रारब्ध भी साथ नहीं देता।

तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति।। 1

(ऋग्वेद 7/32/9)

विश्वकल्याण के लिए पुरुषार्थ ही एकमात्र साधन है, पुरुषार्थ की सदा विजय होती है।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य समकालीन युग की तीव्र प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रगति के मध्य सफलता के वास्तविक अर्थ और उसे प्राप्त करने के वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक मार्ग का विश्लेषण करना है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय ग्रंथों–वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत एवं नीतिशास्त्र में सफलता के विविध आयामों का व्यापक वर्णन मिलता है।

आधुनिक विद्वानों ने भी व्यक्तित्व विकास, लक्ष्य निर्धारण एवं आत्म–प्रबंधन को सफलता के प्रमुख तत्वों के रूप में स्वीकार किया है।

पूर्व शोध यह संकेत करते हैं कि मानसिक संतुलन, अनुशासन एवं सतत् अभ्यास सफलता के अनिवार्य घटक हैं। इस प्रकार पारंपरिक एवं आधुनिक विचारों में सामंजस्य दिखाई देता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राचीन ग्रंथों का पाठ–विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन, व्याख्यात्मक विधि।

[1]Corresponding author

विविध आयाम

मनः (सफलता का मूल आधार)

मनुष्य की सफलता का प्रथम और प्रमुख आधार उसका मन है। मन यदि दृढ़, एकाग्र और सकारात्मक हो, तो असंभव प्रतीत होने वाले कार्य भी संभव हो जाते हैं।

"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" ।।

2 (यजुर्वेद) 34/1

यह मंत्र मन को शुभ संकल्पों से युक्त करने का संदेश देता है।

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत" (कहावत)

इस उक्ति से स्पष्ट है कि सफलता और असफलता का मूल कारण मन की स्थिति है। सकारात्मक सोच व्यक्ति को लक्ष्य की ओर प्रेरित करती है, जबकि नकारात्मक सोच उसे लक्ष्य से भटका देती है।

धम्मपद में मन के बारे में कहा गया है कि –

मनोपकोपं रक्खेय्य मनसा संवुतो सिया ।

मनो दुच्चरितं हित्वा मनसा सुचरितं चरे ।।

3 (धम्मपद, कोधवग्ग 13)

मन के क्रोध की रक्षा करें, मन से संयत रहें, मन के दुश्चरित्र को त्यागकर, मन से अच्छे चरित्र का आचरण करें।

तनरू (कार्यसिद्धि का साधन)

सफलता प्राप्त करने के लिए स्वस्थ शरीर अत्यंत आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। अतः मनुष्य को चाहिए कि अपने शरीर को निरोग बनाकर शरीर की रक्षा करें, क्योंकि सभी कार्यों का आरंभ शरीर से ही होता है। यथा –

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।"

4 (कुमारसम्भवम् 5/33)

अर्थात् शरीर सभी कार्यों का प्रमुख साधन है। यदि व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं है, तो वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आवश्यक परिश्रम नहीं कर सकता। अतः नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और अनुशासित जीवनशैली आवश्यक है।

लक्ष्यः (सफलता की दिशा)

लक्ष्य निर्धारित करने में दो प्रकार की सोच जाग्रत होती है – सकारात्मक और नकारात्मक। कभी लगता है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ, कभी लगता है कि मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा।

सकारात्मक सोच के साथ कक्षा 09, 10 , 11, और 12 वीं इन चार वर्षों में हमारे घर पर शासकीय, अशासकीय सेवाओं, डॉक्टर, इंजीनियर, व्यापारी, समाजसेवी और राजनैतिक क्षेत्र से संबंधित जो भी व्यक्ति आते हैं उनसे, उनके उस क्षेत्र से संबंधित जानकारी, और उसे प्राप्त करने के उपाय, तैयारी के तौर तरीके, भविष्य में पदोन्नति के अवसर, वेतनमान आदि के बारे में जरूर पूछना चाहिए। चार साल में जब हम लगभग 20 लोगों से मुलाकात कर उनके व्यवसाय से भलीभांति परिचित हो जाएंगे। तब फिर हम अपनी योग्यता और क्षमता को ध्यान में रखकर बड़े धैर्य पूर्वक अपने लक्ष्य का निर्धारण करेंगे। लक्ष्य निर्धारित करने के सम्बन्ध में कविवर बिहारी ने कहा है कि–

तेते पांव पसारिए जेती लांमी सौर।

5 (बिहारी सत्सई)

यह कार्य हमें कक्षा 12 वीं तक पढ़ते–पढ़ते कर लेना चाहिए। कक्षा 12 वीं तक लक्ष्य निर्धारित न कर पाने पर उसी प्रकार पछतावा होता है जैसे –

अब पछताएं होय क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

या "का वर्षा जब कृषि सुखाने"

स्वामी विवेकानन्द ने युवाओं को प्रेरित करने के लिए कठोपनिषद के वाक्य द्वारा मार्गदर्शित किया है कि –

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

6 (कठोपनिषत् 3/14)

उठो जागो और जब तक मत रुको तब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये। लक्ष्य बड़ा ,स्वयं, समाज, और देशहित में होना चाहिए। अवस्था के अनुसार लक्ष्य के बारे में कहा गया है कि –

प्रथमे नर्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम्।

तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति।।

7 (संस्कृत सुभाषित)

अर्थात् अवस्थाओं के अनुसार लक्ष्य प्राप्ति करते रहना चाहिये, नहीं तो बुढ़ापे में केवल पछतावा शेष रहता है।

पाठ्यक्रमः (सफलता का मार्ग)

पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार की सफलता का ट्रैक (रास्ता) है । सही रास्ता मिल जाना ही सफलता की पहली सीढ़ी चढ़ जाने के बराबर होता है।

हमने जो लक्ष्य निर्धारित किया है, उस क्षेत्र से संबंधित जानकारों, विशेषज्ञों, सफल व्यक्तियों तथा गूगल आदि से उस क्षेत्र से संबंधित जानकारी, पाठ्यक्रम, निर्धारित पुस्तकें, पुस्तकें कहां से प्राप्त होंगी, परीक्षा कब–कब होती है, नोट्स कैसे बनाएं आदि की जानकारी प्राप्त करें। क्योंकि अच्छे लेखकों की पुस्तकें और पाठ्यक्रम मिल जाना समझो आधी सफलता मिल गई।

सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि क्या पढ़ना है और क्या नहीं पढ़ना है।

तैयारीः (सफलता की कुंजी)

हमने जो लक्ष्य निर्धारित किया है उस सेवा से संबंधित पाठ्यक्रम को जुटाकर उस क्षेत्र में संलग्न, सफल जानकारों, विशेषज्ञों से नोट्स एवं तैयारी के बारे में चर्चा करें। तैयारी सतत् और निरंतर, पाठ्यक्रम की इकाईबार लगभग डेढ़ या दो साल की अवश्य होनी चाहिए। तैयारी में किसी भी प्रकार का शॉर्टकट न अपनाएं। निबंधात्मक प्रश्नों के रूप में तैयारी करें। प्रत्येक इकाई को लगभग 5 बार जरूर पढ़ें, समझें।

सही समय पर सही दिशा में की गई तैयारी ही सफलता के रास्ते पर अग्रसर करती है। यथा –

समये हि सर्वमुपकारि कृतम् ।

8 (शिशुपालवधम् 9/43)

समय पर किया गया सार्थक प्रयास ही उपकारी होता है।

"करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।"

पिछली परीक्षा के प्रश्नपत्रों को खोजकर नई परीक्षा हेतु प्रश्नों का अनुमान (आइडिया) लगाकर स्वयं प्रत्येक इकाई से लगभग 50 से 100 प्रश्न तैयार करें। एक प्रश्न के जो चार विकल्प होते हैं, जिसमें एक सही होता है, बाकी तीन विकल्प को प्रश्न बनाकर उसके उत्तर और उत्तर के प्रश्न बनाकर जरूर तैयार करें। इस तरह एक प्रश्न से हमारे चार प्रश्न तैयार हो जाए।

आवेदन (प्रयास का प्रथम चरण)

रोजगार निर्माण, रोजगार समाचार, दैनिक समाचार पत्रों में विभिन्न सेवाओं से संबंधित विज्ञापन प्रकाशित किए जाते हैं। आप अपने लक्ष्य के अनुरूप सेवा का विज्ञापन देखकर उसकी समस्त शर्तों को भलीभांति समझ कर,बड़ी सावधानी पूर्वक आवेदन भरें।

सही समय पर आवेदन करना और परीक्षा में सम्मिलित होना सफलता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

परीक्षा (प्रयास का द्वितीय चरण, आत्मविश्वास एवं निर्याणक चरण)

प्रतियोगी परीक्षाओं के दो चरण होते हैं 1 लिखित और 2 मौखिक। लिखित परीक्षा में बाह्य आयाम महत्वपूर्ण होते हैं।

एक दिन पूर्व अपनी परीक्षा संबंधी संपूर्ण सामग्री तैयार करना, परीक्षा केंद्र पर समय से पहुंचना, ओएमआर या उत्तर पुस्तिका में अपनी जानकारी सावधानी पूर्वक स्पष्ट और पठनीय लेखनी में लिखें, समय प्रबंधन, शांति और निर्देशों को ध्यान में रखकर, प्रश्नपत्र को ध्यान से पढ़कर आत्मविश्वास के साथ उत्तर हल करें, तनाव न लें अपनी क्षमता पर विश्वास रखें।

परीक्षा साहस का कार्य होता है । यथा –

साहसे खलु श्री वसति ।

9 (चाणक्यसूत्रम् 2/50)

परीक्षा केवल ज्ञान की नहीं, बल्कि श्धैर्यश की भी होती है। संस्कृत का यह श्लोक

उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र सहाय्यकृत विभुः ।।

10 (हितोदेशः मित्रलाभ)

सफलता के छः गुणों – उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम को परिभाषित करता है। सजगता, आत्मविश्वास एवं धैर्य इन गुणों से युक्त व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है। परीक्षा के समय आत्मविश्वास, संयम एवं धैर्य अत्यंत आवश्यक होते हैं। यथा –

धैर्य धना हि साधवः।

11 (कादम्बरी चन्द्रापीड कथा)

धैर्य ही सज्जनों का धन होता है, विषम से विषम परिस्थति में भी हमें धैर्य रखना चाहिए। आत्मविश्वास अहंकार नहीं, बल्कि अपनी तैयारी पर भरोसा है। परीक्षा के तीन घंटों में मानसिक संतुलन बनाए रखना ही श्साहसश है।

मौखिक परीक्षा आप (अभ्यर्थी) पर ही आधारित होती है या अभ्यर्थी के ज्ञान व परिवेश के इर्दगिर्द होती है। मौखिक परीक्षा में आन्तरिक आयाम महत्वपूर्ण होते हैं जैसे– प्रवेश करना, चलना, खड़े होना, पहनावा, बैठना, अभिवादन, तत्काल निर्णय लेने की क्षमता, चेहरे का हाव–भाव सामान्य रखना, आपके चेहरे का भाव और स्वर आत्मविश्वास से भरा हुआ हो, ध्यानपूर्वक प्रश्न सुनना, बोर्ड के सदस्यों से आंख मिलाते हुए मध्यम स्वर में सामासिक शैली में उत्तर देना (कम शब्दों में स्पष्ट और सटीक उत्तर देना), प्रश्न को ध्यान से सुनना, एक मिनट चिंतन कर बिना किसी तनाव या रुकावट के उत्तर देना, प्रश्न में न स्वयं उलझे न बोर्ड को उलझाएं, जिस प्रश्न का जवाब नहीं बनता है सीधा सॉरी कहना सीखें।

सफलता एवं असफलता (जीवन के आयाम)

"यत्नेन विना न सिद्धिः"

प्रयत्न के बिना सिद्धि नहीं मिलती। रामायण में कहा गया है कि –

सोत्साहस्यास्ति लोकेषु न किंचिदपि दुर्लभम्।

12(वाल्मीकि रामायण किषकिन्धाकाण्ड 1/22)

अर्थात् उत्साही के लिये तीनों लोकों में कुछ भी दुर्लभ नहीं।

असफलता से सीख और पुनः प्रयास

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कौत्र दोषः।।

13 (पंचतंत्र 2/137)

प्रयत्न करने पर यदि सफलता न मिले तो हमें देखना चाहिए कि हमारे प्रयत्न में क्या दोष है। सफलता और असफलता दोनों जीवन का अभिन्न अंग हैं। असफलता हमें आत्ममंथन एवं सुधार का अवसर प्रदान करती है। इसलिए असफलता से निराश होने के बजाय उससे धैर्यपूर्वक सीख लेना चाहिए। यथा –

त्याज्यं न धैर्यं विधुरैपि काले।

14 (पंचतंत्र 2/216)

विपत्ति काल में भी धैर्य का त्याग नहीं करना चाहिए।

पुनः प्रयासः (फल प्राप्ति की आशा)

यदि हम अच्छी तैयारी के बाद भी असफल हो जाते हैं तो हमें घबराना नहीं चाहिए, उत्तम व्यक्ति की तरह पूरी शक्ति और साहस के साथ पुनः प्रयास करना चाहिए, सफलता अवश्य मिलेगी।

"प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचौः, प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।

विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति।।

15 (नीतिशतकम् 27)

श्रेष्ठ व्यक्ति विघ्नों से भयभीत होकर कार्य को नहीं छोड़ते, बल्कि पुनः प्रयास करते हैं। निरंतर प्रयास ही सफलता की कुंजी है।

सफलता का फलः (आत्मसंतोष एवं राष्ट्र निर्माण तथा सामाजिक योगदान)

सफलता का अंतिम परिणाम केवल व्यक्तिगत संतोष तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह समाज एवं राष्ट्र के विकास में भी योगदान देता है। सफल व्यक्ति अपने अनुभवों से समाज को दिशा प्रदान करता है।

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

16 (नीतिशतकम् 32)

अर्थात् इस परिवर्तनशील संसार में, जहाँ जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है, वास्तव में उसी का जन्म सार्थक है जिसके जन्म से उसका वंश, समाज और राष्ट्र उन्नति के पथ पर अग्रसर हो।

निष्कर्ष

सफलता एक समग्र प्रक्रिया है, जिसमें मन, तन, लक्ष्य, पाठ्यक्रम, तैयारी, आत्मविश्वास और सतत् प्रयास का समन्वय आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सिद्धांत आज भी पूर्णतः प्रासंगिक हैं। यदि विद्यार्थी प्रारंभ से ही सुनियोजित एवं अनुशासित प्रयास करें, तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

ऋग्वेद 7 / 32/9

यजुर्वेद 34 / 1

धम्मपद कोधवग्ग 13

कालिदास, कुमारसम्भवम् 5 /33

बिहारी सतसई

कठोपनिषत् 3 /14

संस्कृत सुभाषित

माघ, शिशुपालवधम् 9 /43

चाणक्यसूत्रम् 2 /50

हितोपदेश मित्रलाभ

बाणभट्ट, कादम्बरी, चंद्रापीड कथा

वाल्मीकि, रामायण, किष्किन्धाकाण्ड 1/22

पंचतंत्र 2 /137

वही 2 /216

भर्तृहरि, नीतिशतकम् 27

वही 32